विचार बिन्दु

हमारी अभिलाषा जीवन रूपी भाप को इन्द्रधनुष के रंग में रंग देती है। –टैगोर

राजस्थान की लुप्त होती कलाएं एवं उनके संरक्षण हेतु उपाय

राजस्थान की रेतीली धरती पर जन्मी लोककलाएं केवल सजावट नहीं, बल्कि इस प्रदेश की सांस्कृतिक स्मृति और सामूहिक चेतना की जीवंत अभिव्यक्तियां हैं। दीवारों पर बने मांडणे हों, फड़ पर अंकित लोकदेवताओं की गाथाएं, कठपुतलियों के माध्यम से कही गई कहानियां हों या कावड़ के पैनलों पर उभरते प्रसंग हर कला में लोकजीवन, आस्था, संघर्ष और आनंद के रंग घुले हैं। इन कलाओं ने सदियों तक गांव-ढाणी के सामान्य जन को कलाकार बना दिया, जहां औपचारिक डिग्री से अधिक महत्व अनुभव, परंपरा और सामूहिक सीख का था।

आज इन्हीं कलाओं पर संकट के बादल मंडरा रहे हैं। आधुनिकीकरण की चकाचौंध, सस्ते मशीनी उत्पादों का बढ़ता दबदबा, युवाओं का पलायन, सरकारी नीतियों का सीमित प्रभाव और बाजार में मध्यस्थों की पकड़ ने इन लोककला परंपराओं को हाशिये पर पहुँचा दिया है। नागौर के टांकलां क्षेत्र का उदाहरण सामने है, जहां कभी सैकडों कारीगर सूत-धागों से दरियों पर लोकनायकों की कहानियां बुनते थे, अब नाममात्र कलाकार बचे हैं। इसी तरह शाहपुरा (भीलवाड़ा) की फड़ चित्रकला, उदयपुर-चित्तौड़ की कठपुतली, मीणा जनजाति की मांडणा, संझी, कावड़, पाने, गोदना जैसी अनेक विधाएं अब विरले घरों और कुछ संस्थागत प्रयासों तक सीमित रह गई हैं।

फड़ चित्रकला को कभी चलता-फिरता देवालय कहा गया। शाहपुरा की भूमि पर विकसित यह कला बड़े कपड़े पर पाबूजी, देवनारायणजी, रामदेवजी जैसे लोकदेवताओं की गाथाएं उकेरती है। रात को भोपा-भोपियाँ रावणहाथा की धुन पर इन फड़ों का वाचन करते, जिससे कथा, संगीत और चित्रकला का अद्वितीय संगम बनता। लेकिन धीरे-धीरे भोपा समुदाय के लोग दिहाडी मजदूरी या अन्य असंगठित रोजगार की ओर मुड़ गए, जिससे यह परंपरा नियमित अभ्यास और जीविका दोनों स्तर पर कमजोर हुई।

इसी प्रकार कठपुतली कला जो 'कठ' (लकड़ी) और 'पुतली' (गुड़िया) के मेल से लोककथाएं रचती है भाट और नट समुदाय की पहचान रही है। पहले ये कलाकार गांव-गांव भ्रमण कर वीर गाथाएं, सामाजिक संदेश, पुराण प्रसंग और व्यंग्य के माध्यम से जनमानस को शिक्षित और मनोरंजित करते थे। आज वही कला पर्यटन स्थलों या होटलों की छोटी-सी प्रस्तुति तक सिमट गई है, जहां कलाकार अक्सर बिचौलियों पर निर्भर हैं और उन्हें स्थायी सम्मानजनक आय नहीं मिल पाती।

मांडणा कला, जो मिट्टी या गोबर से लीपे हुए आंगन और दीवारों पर चूने व गेरू से बनाई जाती थी, ग्रामीण स्त्रियों की रचनात्मकता की सहज अभिव्यक्ति थी।शुभ कार्य, विवाह, तीज-त्योहार, होली और दीपावली के अवसर पर ये ज्यामितीय आकृतियां, देवी-देवताओं के प्रतीक, पगल्या और चौक घर-आंगन को जीवित बना देते थे। आज पक्के मकानों की सीमेंट-पुती दीवारों और टाइल्स वाले फर्श ने इस कला के नैसर्गिक कैनवास को ही समाप्त कर दिया।

सांझी, जल-सांझी, कावड़, पाने, गोदना, मेहंदी, मिट्टी की कोठियां, बांस-मिट्टी के वील और गोबर के बटेबड़े ये सभी लोककलाएं सामाजिक-सांस्कृतिक ताने-बाने का हिस्सा थीं। संझी में गांव की कन्याएं श्राद्ध पक्ष में देवी रूपांकन कर सुखी गृहस्थी की प्रार्थना करती थीं। चित्तौड़-क्षेत्र की कावड़ कला में लकडी के मंदिरनुमा पैनलों पर राम-कृष्ण कथाएं चित्रित होतीं, जिन्हें धीरे-धीरे खोलते हुए कथा सुनाई जाती थी। शरीर पर गुदवाए जाने वाले गोदने केवल सौंदर्य नहीं, बल्कि जातीय पहचान और आध्यात्मिक प्रतीक भी थे।

इन कलाओं के क्षरण के कारण बहुआयामी हैं। पहला, औद्योगीकरण और वैश्विक बाजार ने मशीनी उत्पादों को सस्ता और सर्वसुलभ बना दिया, जिससे श्रम-सघन हस्तशिल्प प्रतिस्पर्धा में पिछड़ गया। दूसरा, शिक्षा और रोजगार के आधुनिक मॉडल ने युवाओं को गांव से शहर की ओर धकेला; संयुक्त परिवार और पीढ़ीगत प्रशिक्षण की परंपरा टूट गई, जिससे कला का 'गुरु-शिष्य' जैसा घरेलू तंत्र कमजोर हुआ। तीसरा, शहरीकरण और निर्माण-शैली ने पारंपरिक कच्चे घरों, मिट्टी-फर्श और चौपाल संस्कृति को बदल दिया, जो मांडणा, थापा, संझी जैसी कलाओं के स्वाभाविक मंच थे।

राजस्थान की लोककलाएं जड़ों से जुड़ने का पुल हैं। इनकी रक्षा करके ही समाज अपने अतीत, वर्तमान और भविष्य के बीच संवाद को जीवित रख सकता है। यह केवल सरकार या कारीगर की जिम्मेदारी नहीं, हर सजग नागरिक का दायित्व है कि वह जब भी किसी हस्तनिर्मित वस्तु, लोकचित्र या कठपुतली को देखे, उसे सिर्फ 'सामान' न समझे, बल्कि एक जीवंत परंपरा की धड़कन माने और उस धड़कन को थमने से बचाने के लिए अपना छोटा ही सही, पर सार्थक योगदान दे।

आज विपणन तंत्र में कारीगर सबसे कमजोर कडी बनकर रह गया; उत्पाद का अंतिम बाजार मूल्य और कलाकार को मिलने वाली राशि के बीच बड़ी खाई है। पांचवां, सरकारी योजनाओं के बावजूद जागरूकता, प्रशिक्षण और व्यवहारिक क्रियान्वयन की कमी रही। भले ही राजस्थान ने हस्तशिल्प नीति बनाकर कारीगरों के लिए ऋण पर ब्याज वहन, बीमा, डिजाइन केंद्र, हैंडीक्राफ्ट पार्क और संग्रहालय जैसी प्रावधानों की घोषणा की हो, पर ज़मीनी स्तर पर इनका लाभ सीमित कलाकारों तक ही पहुंच पाया है। प्राकृतिक सामग्री-गोबर, मिट्टी, प्राकृतिक रंग, खास किस्म की लकडी-तक पहुंच भी पर्यावरणीय और आर्थिक कारणों से कठिन होती जा रही है।

फिर भी स्थिति निराशाजनक होना अनिवार्य नहीं है, बशर्ते संरक्षण के प्रयास बहुस्तरीय और समन्वित हों। राज्य सरकार ने हाल के वर्षों में कुछ हस्तशिल्प उत्पादों को जीआई टैग दिलाया है, जिससे उन्हें विशिष्ट भौगोलिक पहचान और कानूनी सुरक्षा मिलती है। नाथद्वारा की पिछवाई कला, जोधपुरी बंधेज, उदयपुर की कोफ्तगिरी, बीकानेर की उस्ता कला और कशीदाकारी जैसी विधाओं को यह दर्जा मिल चुका है, तथा कुल मिलाकर दर्जनों रजिस्टर उत्पाद अब इस सूची में हैं। यह दिशा सही है, पर इसे अधिक व्यापक बनाकर फड़, कावड, मांडणा, टांकलां दरी जैसे रूपों तक बढ़ाना होगा।

सरकारी स्तर पर दो मुख्य मोर्चे महत्वपूर्ण है। आजीविका और शिक्षा। आजीविका के लिए आवश्यक है कि कारीगरों को न्यूनतम समर्थन मूल्य जैसा तंत्र, आसान ऋण, समूह बीमा, कौशल उन्नयन प्रशिक्षण और राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनियों में भागीदारी की सहूलियत व्यवस्थित रूप से दी जाए। हस्तशिल्प नीति के तहत प्रस्तावित हैंडीक्राफ्ट डायरेक्टरेट, डिजाइन बैंक, हैंडीक्राफ्ट पार्क और राज्य स्तरीय संग्रहालय जैसे प्रावधान तभी कारगर होंगे, जब कारीगर की सक्रिय भागीदारी और स्थानीय पंचायतों, नगर निकायों तथा सहकारी संस्थाओं का सहयोग सुनिश्चित हो।

शिक्षा के मोर्चे पर आवश्यक है कि लोककलाओं को केवल सांस्कृतिक कार्यक्रम तक सीमित न रखा जाए, बल्कि पाठ्यक्रम, प्रोजेक्ट वर्क और फील्ड विज़िट का हिस्सा बनाया जाए। स्कूलों में मांडणा, संझी, फड़ वाचन, कठपुतली नाटक आदि पर व्यावहारिक गतिविधियां आयोजित की जा सकती हैं। इससे नई पीढ़ी इन विधाओं को 'पुरानी चीज़' नहीं, बल्कि जीवंत अनुभव के रूप में देखेगी।

पर्यटन और लोककला का समन्वय भी बड़ा अवसर है। विशेषज्ञों के अनुसार 'क्राफ्ट टूरिज़्म ट्रेल्स' विकसित कर पर्यटकों को कारीगरों के गांव, कार्यशालाओं और उत्पादन केंद्रों तक ले जाया जाए, ताकि वे निर्माण प्रक्रिया देख सकें, कलाकारों से संवाद कर सकें और सीधे खरीदारी कर सकें। इससे कारीगर को उचित मूल्य मिलेगा और ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत होगी। जोधपुर, जयपुर, उदयपुर जैसे शहर पहले से ही 'वर्ल्ड क्राफ्ट सिटी' जैसी पहचान की दिशा में बढ़ रहे हैं, इन्हें आसपास के कला-ग्रामों से बेहतर ढंग से जोड़ा जा सकता है।

डिजिटल प्लेटफॉर्म लोककलाओं के लिए नई संभावनाओं के द्वार खोल रहे हैं। ऑनलाइन गैलरी, ई-बाज़ार, शॉर्ट डॉक्यूमेंट्री, पॉडकास्ट और वर्चुअल प्रदर्शनियों के माध्यम से इन कलाओं को वैश्विक दर्शकों तक पहुंचाया जा सकता है। फड़ चित्रकला की कहानी को डिजिटल कथा के रूप में, मांडणा को ई-वर्कशॉप के रूप में, कठपुतली को वेब-सीरीज़ या इंटरैक्टिव शो के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

समाधान का एक और अहम आयाम है-महिलाओं और युवाओं की भागीदारी। स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से मांडणा, मेहंदी, संझी, कशीदाकारी जैसी कलाओं को माइक्रो-एंटरप्राइज में बदला जा सकता है। युवा डिजाइनर और कलाकार पारंपरिक रूपों को आधुनिक उपयोग होम डेकोर, फैशन, डिजिटल आर्ट से जोड़ सकते हैं, जिससे विरासत और नवाचार का संतुलन बने।

अंततः प्रश्न केवल कलाओं के संरक्षण का नहीं, बल्कि एक सभ्यता की स्मृति बचाने का है। लोककलाएं हमारे गांवों, बस्तियों और जनजातियों के भीतर संचित उस ज्ञान की प्रतीक हैं, जिसे लिखित इतिहास अक्सर दर्ज नहीं कर पाता। यदि इन्हें समय रहते संजोया नहीं गया, तो आने वाली पीढ़ियाँ केवल संग्रहालयों और शोध-पत्रों में इन्हें खोजेंगी, अपने आसपास के जीवन में नहीं।

राजस्थान की लोककलाएं जड़ों से जुड़ने का पुल हैं। इनकी रक्षा करके ही समाज अपने अतीत, वर्तमान और भविष्य के बीच संवाद को जीवित रख सकता है। यह केवल सरकार या कारीगर की जिम्मेदारी नहीं, हर सजग नागरिक का दायित्व है कि वह जब भी किसी हस्तनिर्मित वस्तु, लोकचित्र या कठपुतली को देखे, उसे सिर्फ 'सामान' न समझे, बल्कि एक जीवंत परंपरा की धड़कन माने और उस धड़कन को थमने से बचाने के लिए अपना छोटा ही सही, पर सार्थक योगदान दे।

–अतिथि संपादक,
अविनाश जोशी,
वरिष्ठ पत्रकार एवं कॉरपोरेट सलाहकार

गागरोन दुर्ग में इतिहास रचा, 5100 विद्यार्थियों की एकसाथ चित्रकारी से बना विश्व रिकॉर्ड

राज्य सरकार की पंच गौरव योजना के तहत आयोजित हुआ गागरोन दुर्ग चित्रकला महोत्सव

■ गागरोन दुर्ग सदियों से इतिहास का साक्षी रहा है, लेकिन आज जिस तरह यहां कला का महासागर उमड़ा, वह दुर्लभ है : कलैक्टर

गागरोन दुर्ग चित्रकला महोत्सव के तहत बच्चों ने गागरोन दुर्ग को कैनवास पर उकेरा।

झालावाड़, (निसं)। विश्व धरोहर स्थल गागरोन दुर्ग बुधवार को साक्षी बना एक अद्वितीय और ऐतिहासिक क्षण का, जब पांच हजार से अधिक विद्यार्थियों ने एक साथ चित्रकारी कर विश्व रिकॉर्ड स्थापित किया। राज्य सरकार की पंच गौरव योजना के तहत आयोजित गागरोन दुर्ग चित्रकला महोत्सव ने जिले ही नहीं, पूरे प्रदेश में कला और सांस्कृतिक चेतना की नई लहर पैदा कर दी। वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड में यह रिकॉर्ड दर्ज किया गया।

सुबह से ही ऐतिहासिक दुर्ग परिसर उल्लास, उत्साह और रचनात्मकता से भर उठा। फोर्ट की प्राचीन दीवारों और शांत जलराशि के बीच जब हजारों विद्यार्थियों ने अपनी पेंट ब्रश से रंग बिखेरने शुरू किए तो पूरा वातावरण मानो एक विशाल कैनवास में बदल गया। जिला कलैक्टर अजय सिंह राठौड़ ने इस विश्व स्तरीय उपलब्धि को जिले के लिए अविस्मरणीय क्षण बताया। उन्होंने कहा कि गागरोन दुर्ग सदियों से इतिहास का साक्षी रहा है, लेकिन आज जिस तरह यहां कला का महासागर उमड़ा, वह दुर्लभ है। यह आयोजन सिर्फ एक रिकॉर्ड नहीं, बल्कि हमारे बच्चों की रचनात्मकता, विरासत के प्रति सम्मान और जिले की पहचान को समर्पित है। यह आयोजन न केवल बच्चों की प्रतिभा का उत्सव बना, बल्कि गागरोन दुर्ग को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कला, संस्कृति और पर्यटन के नए केंद्र के रूप में स्थापित करने वाला साबित होगा।

आयोजन के दौरान रामबुर्ज पर पंचगौरव के तहत चयनित खेल बास्केटबॉल का रोमांचक मैच भी आकर्षण का केंद्र रहा। झालावाड़ गर्ल्स टीम और बॉयज़ टीम के बीच मैच आयोजित किया गया। विशेष बात यह रही कि जिला कलैक्टर अजय सिंह राठौड़ और पुलिस अधीक्षक अमित कुमार ने स्वयं गर्ल्स टीम की ओर से मैदान में उतरकर खेला, जिससे खिलाड़ियों और दर्शकों का उत्साह चरम पर पहुँच गया। गागरोन दुर्ग, संतरा, सागवान, कोटा स्टोन और बास्केटबॉल-जिले के पंच गौरव विषयों पर आधारित स्टॉलों पर लोगों की खूब भीड़ रही। स्टॉलों ने जिले की विशेषताओं, उद्योगों, उद्यानिकी, पर्यटन और लोक विरासत को आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया।

सीईओ शंभूदयाल मीणा और एसडीएम अभिषेक चारण के नेतृत्व में सुरक्षा, आवागमन, पेयजल, चिकित्सा, बिजली, व्यवस्था और नियंत्रण का बेहतरीन प्रबंधन किया गया। सभी विभागों ने समन्वय के साथ ऐसी व्यवस्था सुनिश्चित की कि विद्यार्थी और आगंतुक पूरे समय सहज और सुरक्षित रहे। इस दौरान जिला कलैक्टर, पुलिस अधीक्षक सहित जनप्रतिनिधियों द्वारा किले में संतरा व सागवान के पौधों का रोपण किया गया। कलैक्टर ने पिछले 15 दिनों से विशेष रूप से गागरोन दुर्ग में व्यापक स्तर पर सफाई व्यवस्था और झाड़ियों की कटाई के कार्य को करने वाली मनरेगा की महिला श्रमिकों का धन्यवाद ज्ञापित किया। उन्होंने उपस्थित आमजन, विद्यार्थियों, शिक्षकों, स्वयंसेवी संगठनों और सभी विभागों का आभार व्यक्त किया, जिन्होंने इस विशाल आयोजन को सफल बनाया। इस अवसर पर जिला प्रमुख प्रेम बाई दांगी, आरपीएससी के पूर्व अध्यक्ष श्याम सुंदर शर्मा, जिलाध्यक्ष हर्षवर्धन शर्मा, पुलिस अधीक्षक अमित कुमार, उप वन संरक्षक सागर पंवार, अतिरिक्त जिला कलेक्टर अनुराग भार्गव, जिला परिषद के सीईओ शंभु दयाल मीणा, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक भागचंद मीणा, उपखण्ड अधिकारी अभिषेक चारण, उपखण्ड अधिकारी भवानीमंडी श्रद्धा गोमे, झालरापाटन प्रधान भावना झाला सहित विभिन्न स्वयंसेवी संगठनों के प्रतिनिधि और नागरिक मौजूद रहे।

सर्दी बढ़ने के साथ ही अलवर के सरिस्का में कई देशों के प्रवासी पक्षी पहुंचने लगे

सिलीसेढ़, कर्णकवास, मानसरोवर, हनुमान सागर और किरास्का जैसे जलस्त्रोतों पर प्रवासी पक्षी नजर आ रहे हैं

■ बार हेडेड गूज, रड्डी शेलडक, जैकोबिन कोयल, लेसर व्हिसलिंग डक, गार्गनी, कॉमन टील, कॉमन सैंडपाइपर और नॉर्दर्न पिंटेल पक्षी पहुंचने लगे

जल भराव वाले स्थानों पर प्रवासी पक्षी नजर आ रहे हैं।

अलवर, (निसं)। अलवर के सरिस्का में टाइगर के ठिकाने पर शिकारी पक्षी आ पहुंचे हैं। सर्दी की जकड़न बढ़ने के साथ सरिस्का में प्रवासी पक्षियों ने आकर चार चांद लगा दिए हैं। यहां शिकारी पक्षियों का जमावड़ा हो गया है। कई जगहों पर जल भराव वाले स्थानों पर देखे जाने लगे हैं, जिनमें प्रमुख रूप से सिलीसेढ़ , कर्णकवास, मानसरोवर, हनुमान सागर और किरास्का जैसे जलस्त्रोतों पर दुनिया भर के प्रवासी पक्षी नजर आ रहे हैं।

सरिस्का के सीसीएफ संग्राम सिंह ने बताया कि सरिस्का टाइगर रिज़र्व जो स्वस्थ वन पारिस्थितिकी का एक महत्वपूर्ण संकेतक है। इन दिनों प्रवासी पक्षियों और शक्तिशाली रैप्टर्स (शिकारी पक्षियों) की आमद से जीवंत हो उठा है। यहां कुल करीब 272 से अधिक पक्षी प्रजातियां हैं, उनमें से करीब 57 प्रवासी प्रजातियां शामिल हैं। सरिस्का अपने सिलीसेढ़, कर्णकवास, मानसरोवर, हनुमान सागर और किरास्का जैसे जलस्त्रोतों के कारण दुनियाभर के पक्षियों को आकर्षित करता है। इस मौसम में मध्य एशिया से बार हेडेड गूज, मंगोलिया से रड्डी शेलडक, दक्षिण अफ्रीका से जैकोबिन कोयल, चीन और मालदीव से लेसर व्हिसलिंग डक, यूरोप से गार्गनी, साइबेरिया से कॉमन टील, उपोष्णकटिबंधीय यूरोप से कॉमन सैंडपाइपर और यूरोप, कज़ाकिस्तान व तिब्बत से नॉर्दर्न पिंटेल पहुंचने लगे हैं। इसके साथ ही, सरिस्का में 32 प्रजातियों के रैप्टर्स- जिनमें क्रेस्टेड सर्पेंट ईगल, बोनैलीज़ ईगल, शिकरा और व्हाइट-आइड बजर्ड प्रमुख हैं- भी आसमान में मंडराते देखे जा रहे हैं। नवंबर से फरवरी तक का समय बर्डवॉचिंग के लिए सबसे उपयुक्त माना जाता है। इस दौरान सरिस्का प्रकृति व पक्षी प्रेमियों के लिए एक अद्भुत अनुभव प्रदान करता है।

टोरड़ा सहकारी समिति में यूरिया के लिए किसानों की भीड़ उमड़ी

सहकारी समिति में दो घंटे में खाली हुई 600 कट्टे यूरिया खाद की गाड़ी

■ यूरिया खाद की सीमित आपूर्ति और अत्यधिक मांग के चलते किसानों को घंटों ठंड में खाद के लिए इंतजार करना पड़ा

ग्राम टोरडा स्थित सहकारी समिति पर यूरिया खाद लेने के लिए किसानों की भीड़ लग गई।

पावटा, (निसं)। फसलों के लिए आवश्यक यूरिया खाद को लेने के लिए बड़ी संख्या में किसान टोरड़ा सहकारी समिति में पहुंचे। सर्दी ने किसानों की परेशानी और बढ़ा दी है।

जानकारी के अनुसार ग्राम टोरडा स्थित सहकारी समिति पर यूरिया खाद लेने के लिए किसानों की सुबह से ही लंबी कतारें लग गई। यूरिया खाद की सीमित आपूर्ति और अत्यधिक मांग के चलते किसानों को घंटों ठंड में खाद के लिए इंतजार करना पड़ा। सुबह से ही लगी किसानों की लंबी कतारें प्रबंधन के लिए चुनौती बन गई।

कृषि अधिकारी जयप्रकाश व सोहनलाल ने बताया कि टोरडा सहकारी समिति में कुल 600 यूरिया के कट्टे उपलब्ध हुए थे, जिन्हें 2 घंटे के अंदर किसानों को वितरित किया गया। वही अभी 2000 कट्टो की और आवश्यकता है। समिति की देखरेख में वितरण प्रक्रिया पूर्ण पारदर्शिता के साथ संपन्न हुई। किसानों की संख्या अधिक होने के कारण आपूर्ति के दौरान किसानों को थोड़ी परेशानी का सामना करना पडा। वहीं किसानों ने मांग की है कि रबी की फसल को देखते हुए यूरिया की आपूर्ति को बढ़ाया जाए, ताकि उन्हें परेशानियों का सामना न करना पड़े। यूरिया खाद की मांग अधिक होने के कारण वहां आई एक गाड़ी मात्र दो घंटे में खाली हो गई। कई किसानों को खाद नहीं मिल सका और उन्हें मायूस होकर खाली हाथ लौटना पड़ा। आमतौर पर रबी फसलों-गेहूं, सरसों, जौ और चना की बुवाई का समय किसानों के लिए खुशहाली लेकर आता है, लेकिन इस बार हालात इसके विपरीत नजर आ रहे हैं। यूरिया खाद की भारी किल्लत के चलते किसान वर्ग में हाहाकार मचा हुआ है। किसान यूरिया की तलाश में दुकानों, क्रय-विक्रय सहकारी समितियों और अन्य केंद्रों के चक्कर काटने को मजबूर हैं।

किसानों का कहना है कि यदि मौसम निकलने से पहले यूरिया उपलब्ध नहीं हुआ तो समय पर बुवाई नहीं हो पाएगी, जिससे इस बार की फसल पर सीधा असर पड़ेगा और पूरी खेती खराब होने का खतरा बना रहेगा। ऐसे में किसान सरकार और प्रशासन से शीघ्र पर्याप्त मात्रा में यूरिया उपलब्ध कराने की मांग कर रहे हैं, ताकि रबी फसलों की बुवाई समय पर हो सके।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

गुरूवार 11 दिसम्बर, 2025

पौष मास, कृष्ण पक्ष, सप्तमी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2082, पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र रात्रि 3:56 तक, विष्कुम्भ योग दिन 11:40 तक, बव करण दिन 1:57 तक, चन्द्रमा आज सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृश्चिक, चन्द्रमा-सिंह, मंगल-धनु, बुध-वृश्चिक, गुरू-मिथुन, शुक्र-वृश्चिक, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज कालाष्टमी है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 8:27 तक, चर 11:02 से 12:20 तक, लाभ-अमृत 12:20 से 2:55 तक, शुभ 4:12 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 7:10, सूर्यास्त 5:30 तक

मेष
परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आज आवश्यक कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। आज खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

वृष
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

मिथुन
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

सिंह
घर-परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक-सामाजिक समारोह में भाग ले सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों परेशानी हो सकती है। धन हानि का भय है। अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। परिवार में वाद-विवाद हो सकते हैं।

तुला
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

धनु
व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखें। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। आज स्वभाव की तेजी पर नियंत्रण रखें। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

कुंभ
परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
स्वास्थ्य एवं अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।